भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर
Indian Institute of Technology Bhubaneswar

प्रेस विज्ञप्ति

सामाजिक-राजनीतिक असमानताओं के उन्मूलन संबंधी समाधानों पर वैचारिक विमर्श हेतु आईआईटी भुवनेश्वर में किया गया भारतीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था संघ के 27वें वार्षिक सम्मेलन का सफल आयोजन

भुवनेश्वर, 29 जनवरी 2024: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर ने 27 और 28 जनवरी 2024 को "भू-राजनीति, ऊर्जा, वित्त और लोकतंत्र" विषय पर भारतीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था संघ (आईपीईए) के 27वें वार्षिक संस्करण सम्मेलन का आयोजन किया। संस्थान के इस ऐतिहासिक पल को चिह्नित करते हुए, मानविकी, सामाजिक विज्ञान और प्रबंधन विद्यापीठ द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें पर्यावरण संबंधी मुद्दों, वैश्विक सामाजिक-राजनीतिक असमानताओं और असमानताओं को दूर करने के समाधान जैसे विविध विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। इस सम्मेलन ने अंतरराष्ट्रीय समष्टि अर्थशास्त्र, वित्त, चुनावों के राजनीतिक अर्थशास्त्र, शासन, स्वास्थ्य नीतियों, वैश्विक आर्थिक पदचिह्न और अन्य मुद्दों पर सकारात्मक चर्चा का अवसर प्रदान किया गया। सम्मेलन में विचार-विमर्श भविष्य की अनुसंधान संभावनाओं और प्रस्तावित प्रभावी नीति उपायों पर केंद्रित था जो भारतीय संदर्भ में समावेशी विकास, स्वास्थ्य और शिक्षा के मुद्दों और शासन विषयों की समस्याओं का समाधान करते हैं।

कार्यक्रम के शुभारंभ में, इस सम्मेलन के संयोजक और आईआईटी भुवनेश्वर में अर्थशास्त्र के सहायक प्रोफेसर डॉ. सिताकांत पांडा के स्वागत भाषण से हुआ। प्रो. बलविंदर सिंह तिवाना, आईपीईए हस्ताक्षरकर्ता ने इस कार्यक्रम के महत्व पर बात करते हुए, संगठन के इतिहास, और आईपीईए की भावी संभावनाओं के बारे में अपना विचार रखा। उन्होंने संगठन की लोकतांत्रिक और गैर-पदानुक्रमित संरचना पर जोर देकर आर्थिक अनुसंधान में अपने समावेशी और अंतःविषय चरित्र को रेखांकित किया। इस उपलक्ष्य पर कार्यक्रम प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए, प्रो. श्रीपाद करमलकर, निदेशक, आईआईटी भुवनेश्वर ने एक विषय के रूप में राजनीति और दर्शन के सापेक्ष अर्थशास्त्र विषय पर अपने अनुभवों को सबके साथ साझा किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार, सामाजिक बहसों में, सामान्य व्यक्ति अर्थशास्त्र की तुलना में राजनीति और दर्शन जैसे मुद्दों पर अधिक चर्चा करता है, इस तथ्य के बावजूद कि अर्थशास्त्र सामाजिक सुधार में ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अत:, सामाजिक परिस्थितियों पर चर्चा करते समय औसत शिक्षित लोगों को मौलिक आर्थिक सूचकांकों, जैसे कि जीडीपी, एफडीआई, स्टॉक इंडेक्स, आदि के अर्थ और उपयोग के बारे में शिक्षित करना आवश्यक है। उनके अनुसार, यह शिक्षाविदों और अर्थशास्त्र से संबंधित संगठनों का दायित्व है। इसके पश्चात उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि, एसबीआई समूह के समूह मुख्य आर्थिक सलाहकार, डॉ सौम्या कांति घोष ने भारत में वित्त और विकास के भविष्य

के दृष्टिकोण पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने चार 'आई': नवाचार, समावेशिता, निवेश और बुनियादी ढांचा पर ध्यान केंद्रित करने की बात कही। उन्होंने नीति निर्माण के दौरान व्यावहारिक और सैद्धांतिक पर विशेष रूप से ध्यान देने की बात कही। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन डॉ. दुखबंधु साहू, मानविकी, सामाजिक विज्ञान और प्रबंधन विद्यापीठ के प्रमुख ने किया।

इस दो दिवसीय सम्मेलन में कई समानांतर तकनीकी सत्रों को शामिल किया गया। इस अवसर पर ज्यूरिख विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों प्रो. कथारिना माइकेलोवा और उमास अमहेस्ट के प्रो. सी.पी. चंद्रशेखर द्वारा दो व्याख्यान भी दिए गए। सम्मेलन में कुछ प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों द्वारा विशेष पैनल चर्चा भी की गई जिसमें से एक भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति तथा दूसरा वर्तमान विश्व व्यवस्था में भारत के स्थान पर। सम्मेलन के समापन सत्र में प्रो. आर. विजय और प्रो. अमरजीत सिंह सिद्धू ने भी अपनी गरिमामय उपस्थिति दर्ज की। इस सम्मेलन में देश-विदेश के विभिन्न प्रोफेसरों और अनुसंधान विद्वानों सहित 100 से अधिक प्रतिनिधियों ने सहभागिता की।